पर्यावरण मित्र

प्रस्तावना पर्यावरण मित्र योजना

पृथ्वी पर उत्तरोत्तर गर्मी बढ़ रही है, प्रदूशण बढ़ रहा है जिससे नदियों एवं श्रोतों का पानी पीने लायक ही नही रह गया है । उत्तरॉचल जैसे राज्य जिसे उर्जा प्रदे ा के रूप में विकसित किया जा रहा है उसका भविश्य में क्या हश्र होगा क्या आप लोग जानते हैं ? क्लोरोफ्लोरो कार्बन की मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ने से ओजॉन परत को क्षति पहुंच रही है बैज्ञानिकों द्वारा यह बताया जा रहा है कि दक्षिणी ध्रुव की ओर ओजॉन परत को क्लोरोफ्लोरो कार्बन के द्वारा जो दिनप्रतिदिन क्षति पहुंचा है उससे ओजॉन परत में छेद हो गया है। बर्तमान समय में रेफ्रिजरे ान सिस्टम तथा बातानुकूलित म ीनों से जो गैस उत्सर्जित होती है उसमें से क्लोरोफ्लोरो कार्बन उत्सर्जित होती है इसके अतिरिक्त कई तरह के कार्बनिक पदार्थो का वातावरण में मिलने से ओजॉन परत को क्षति पहुंच रही है। परिणामस्वरूप प्रतिदित पृथ्वी की गरमी बढ़ रही है।बैज्ञानिक भाोधों के अनुसार यह तथ्य संज्ञान में आया है कि यदि इसी दर से क्लोरोफ्लोरो कार्बन का रिसाव होता रहा तो ओजॉन परत में छेद होने के कारण सूर्य की पैराबैगिनी किरणें (अल्ट्रावायलेट किरणें) सीधे पृथ्वी पर पड़ने से चर्म रोग बढेगा। ओजॉन परत इन अल्ट्रावायलेट किरणों को पृथ्वी में सीधे पड़ने से रोकती है। चर्म रोग के साथ–2 पृथ्वी की गरमी भी प्रतिबर्श बढ़ रही है आज यह आलम हो गया है कि गरमी के कारण बर्शभर हिमालय में आच्छादित बर्फ भी सूखने की कगार पर है। हिमालय से बहने वाली सभी नदियॉ सदावाहिनी (बर्श भर बहती) हैं जो जाडों में अपने न्यूनतम स्तर पर बहती है तथा जब दे ा के अन्य हिस्सों में गरमी के कारण सूखे की स्थिति रहती है तो ये नदियॉ जल से पूर्णरूप भरी रहती हैं। यदि जिस गति से बर्तमान समय में हिमालय से बर्फ अदृ य हो रहा है, उस परिवे ा में आने वाले 50 सालों के बाद उर्जा प्रदे ा के रूप में विकसित उत्तरॉचल प्रदे ा अपने इन नदी घाटी परियोजनाओं को निरन्तर नहीं चला पायेगी। मैं समझता हूॅ कि यदि इसी गति से बर्फ पिघली तो आने वाले 50 बर्शो के बाद सरस्वती नदी की भॉति मात्र दंत कथाओं में गंगा और यमुना नदी का नाम रहेगा । आज पानी इतना दूशित हो चुका है कि अधिकतर बडे लोग बोतल बंद पानी ही पी रहे हैं अगर यही गन्दगी का आलम रहा तो आने वाले बर्शो में हर व्यक्ति को बोतल बंद पानी पीने हेतु मजबूर होगा और पानी की क्या कीमत होगा इसका अनुमान लगाया जा सकता है। आपको यह भी जानकारी होगी कि उत्तर तथा दक्षिण ध्रुवों में जो बर्फ सदियों से पड़ी थी वह इस ग्लोवल वार्मिग के कारण तेजी से पिघल रही है। यदि यही आलम रहा तो समुद्र के किनारे स्थित सभी भाहर आने वाले कुछ बर्शो में जलमग्न हो जायेंगे। एकबात यह भी स्पश्ट करना चाहुॅगा कि जहॉ–तहॉ आग लगने से करोडों की बन सम्पदा तो नश्ट होने से धरातल पर पडे पत्ते आदि जलने से बारिस के पानी का रिसाव धरती पर न होने के कारण पहाडी क्षेत्रों में अत्यधिक पानी की कमी हो चुकी है। अतः मै आप सभी लोगों से यह भी आग्रह करना चाहूंगा कि बनों में आग न लगाये,बनाग्नि को रोकें तथा रोकने में सहयोग करें।

इस प्रकार पर्यावरण का क्षरण न हो इसलिए बार–2 पर्यावरण विदों द्वारा पेड़ पौधे लगाने की सलाह दी जाती है और पेड पौधों से निकलने वाला ऑक्सीजन कार्बनिक गैसों को नश्ट करती है जन संख्या का दबाव व मानव आव यकताओं के कारण हर दिन हजारों पेड़ों को

तो कटना ही है। बर्श 1991–92 में ब्राजील की राजधानी रियोडिजिनियोरें में वि व अर्थ सम्मेलन (अर्थसमिट) हुआ था जिसमें वि व के सभी विकसित एवं विकास ील दे ों के पर्यावरणविदों द्वारा भाग लिया गयां। जिसमें ऐजेन्डा 21 नामक ऐजेन्डा तैयार किया गया तथा क्लोरोफ्लोरो कार्बन गैस का अंत किस तरह से किया जाय में बिचार बिम िकिया गया। रेफ्रिजिरे ान सिस्टम के प्रभाव को कम करने के लिए इसे त्यागने की सलाह दी गयी , जनसख्ंया बृद्धि रोकने पर भी दवाव दिया गया किन्तु यह मात्र किताबी रहा तथा इसका बिकल्प न मिलने के कारण अभी भी लगातार उत्तरोत्तर मात्रा में प्र ीतक ग्रहों का तथा फ्रिजिंग सिस्टम का उपयोग किया जा रहा है इसी प्रकार बर्तमान समय में प्लास्टिक एवं पॉलिथीन का इतना महत्व बढ़ गया है कि हम इसके प्रयोग को बंद नही कर सकते हैं किन्तु बातावरण में होने वाले इसके कुप्रभाव को कम अव य किया जा सकता है। आये दिनों प्र ासनिक अधिकारियों द्वारा प्लास्टिक पॉलिथीन बंद करने की बकालत की जाती है किन्तु जिन अधिकारियों द्वारा इस पर प्रतिबंध लगाया जाता है वे भी इसके महत्व के कारण इसके प्रयोग का लोभ को नही त्याग रहे हैं ।

प्लास्टिक / पालीथीन के कूडें से हानियॉ

- प्लास्टिक खुले में जलाने से बिशैली गैसें निकलती हैं जो हमारे पर्यावरण को प्रदूशित कर पृथ्वी की गरमी को बढ़ाने में सहायक हैं ।
- प्लास्टिक खाने से गाय भैंस आदि जानवरों की अकाल मृत्यु हो रही है तथा दूध पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है।
- हजारों रू0 से निर्मित सीबर लाइनें चोक हो रही हैं इसका ताजा उदाहरण बिगत बर्श मुम्बई ,मद्रास जैसे भाहरों में कई घरों में बाढ जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी।
- जिस स्थान पर प्लास्टिक गिरता है वह स्थान बंजर हो जाता है।
- अधिकतर कूडा नालो मे गिरता है तथा सभी नाले नदियों मे गिरते है जिससे नदियॉ दूशित हो रही है।
- प्लास्टिक व पालीथीन न तो सडती है और न ही गलती है इसलिए पालीथीन युक्त कूड़ा रखने हेतु हमे ा भूमि की आव यकता रहती है।

अतः मैंने श्रीनगर भाहर में पहिले प्लास्टिक पर रोक लगायी और जब कभी भी देहरादून तथा ऋशिकेश की तरफ आता तो मैं स्वयं भी प्लास्टिक में सामान लेने हेतु मजबूर हो जाता इसलिए मुझे यह युक्ति सूझी कि क्यों न प्लास्टिक के दुश्प्रभाव को कम किया जाय तथा जनजागृति के माध्यम से विकसित दे ों की भॉति भारत में भी सुनियोजित कूड़ा निस्तारण प्रक्रिया अपनायी जाय। अतः मेरे द्वारा नगर पालिका श्रीनगर गढवाल के सहयोग से श्रीनगर में 11मार्च से पर्यावरण मित्र योजना का भुभारम्भ किया गया।

पर्यावरण मित्र योजना

- प्रत्येक घरो से जैविक तथा अजैविक के आधार पर अलग–2 किया गया कूड़ा उठाने की योजना को पर्यावरण मित्र योजना नाम दिया गया है।
- इस योजना हेतु कुछ रिक ो चालक तैनात किये गये हैं जिन्हें साइकिल रिक ाा तथा डिब्बे अलग–2 तरह के कूडे रखने हेतु दिये गये है,जो प्रति घरों से जैविक तथा अजैविक कूड़ा अलग–2 उठा रहे हैं ।
- जैविक कूड़ा (सब्जियॉ,फल,पत्ते तथा अनाज से संबंधित क्षय ील कूड़ा) तथा अजैविक कूडा (कागज,प्लास्टिक,पॉलिथीन व अन्य सभी प्रकार का ठोस कूडा) एकत्र कर जैविक कूड़े से जैविक खाद तथा अजैविक कूड़े को रिसाइकिलिंग हेतु बेचा जाता है।

- इस योजना के तहत खुले में कूडा गिराना पूर्णरूप से प्रतिबंधित है तथा सभी लोगों से यह आग्रह किया गया है कि कूड़ा जैविक तथा अजैविक अलग–2 दो कूडदानों में रखें तथा पर्यावरण मित्र के आने पर उन्हें सौंप दें।
- यदि पर्यावरण मित्र के आने तक कोई व्यक्ति घर में नही उपस्थित रहता है तो कूडेदानों को अपने गेट के भीतर इस प्रकार रखे कि पर्यावरण मित्र आकर स्वयं ले जायं।
- सभी सार्वजनिक स्थानों से कूडेदान हटा दिये गये हैं।
- जब सभी सफायी कर्मी अथवा दो सफायीकर्मी पर एक रिक ा तथा प्रत्येक को दो–2 वाल्टी दी गयी हैं तो कही भी सार्वाजनिक कूडेदान रखने की आव यकता नही पड रही हैं।
- सभी घरों में तथा दुकानों में दो –2 कूडेदान एक जैविक (सब्जी,फल,पत्ते तथा अनाज से संबंधित क्षय ील कूडा) तथा दूसरा अजैविक(कागज,प्लास्टिक,व अन्य सभी प्रकार का ठोस कूड़ा) लिखकर रखे गये हैं ।
- दुकानदारो /व्यवसायियों को दोनों कूडेदानों को दुकान के बाहर एक ही स्थान पर ं रखने के निर्दे ा दिये गये हैं जिससे कोई भी व्यक्ति संबंधित कूडेदान में ही संबंधित कूडा डाल सके।
- अधिकतर व्यवसायियों द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि उनकी दुकानों में केवल अजैविक कूडा ही होता है इसलिए वे एक की कूडादान रखेंगे तथा सब्जी बिक्रेताओं द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि उनकी दुकान में जैविक कूड़ा होता है इसलिए वे भी एक ही कूडादान रखेंगे। किन्तु अजैविक कूडे वाले दुकानदार दिन में फल इत्यादि खाते हैं इसी प्रकार कुछ सब्जियॉ भी प्लास्टिक की पैकिंग पर आ रही हैं तथा यदि पॉलिथीन प्रयोग करते हैं तो फटने वाले पॉलिथीन को रखने की भी व्यवस्था करनी है। इस प्रकार व्यवसायियो के अतिरिक्त ग्राहको को भी कूडा डालने की व्यवस्था की गयी है।
- श्रीनगर में सभी ट्रालियों, जिसमें सब्जियॉ, रेढियों यहॉ तक कि आइसक्रीम ट्रालियों में भी कूडेदान, ट्राली के आगे की ओर टांके गये हैं। कोई भी ग्राहक जब दुकान में आता है तो सभ्य संस्कृति युक्त न होने के कारण कूड़ा खुले में गिरा देते हैं यदि दुकानों के आगे दो कूडेदान रखे होंगे तो वे कूडा संबंधित कूडेदानों में ही डालेंगे।
- पर्यावरण मित्र/ सफायीकर्मी आकर अलग–2 किया हुआ कूड़ा रिसाइकिलिंग हेतु अथवा कम्पोस्ट खाद बनाने हेतु ले जाते है।
- कूडे का भावः– यदि जैविक कूडे से जैविक खाद बनायें तो कमसे कम 2 से लेकर 5 रू0 किलों तक बिकेगा । साधारण पॉलिथीन 2 रू0 कि0, दूध के पैकेट तथा पानी की बोतलें 8 रू0 किलों तथा अन्य प्रकार की साफ पॉलिथीन 10–12 रू0 प्रति किलो तक भी है।

- प्रत्येक धरो से इस कार्य के एवज मे 10–10 रूपया दिया जा रहा हैं। जैविक खेती के महत्व को लोग सीधे समझ पायेंगे एवं खेतों में रसायनिक खादों का दुश्प्रभाव नही पड़ेगा।
- पर्यावरण मित्र योजना अपनाने के लिए नगर पालिकायें ट्रेक्टर में कूडा रखने हेतु दो भाग कर सकते हैं तथा श्रीनगर की भॉति सीटी बजाकर स्वयं दुकानों व घरों से कूडा एकत्र कर सकते है, कूडे से प्राप्त आय सफायी कर्मियों / पर्यावरण मित्रों के मध्य अव य बंटना चाहिए । एक ट्रेक्टर के साथ 4 – 5 सफायी कर्मी पैदल चलकर भी घरों से जैविक तथा अजैविक कूडा उठाकर ट्रेक्टर में रख सकते हैं प्रत्येक घरों से 20–20 रू0 कार्य के एवज में प्राप्त कर सकते हैं ।
- इस योजना के तहत भाहरी एवं ग्रामीण श्रेत्रो मे जन सहयोग से पेड भी लगाये जा रहे है।

पर्यावरण मित्र योजना के लाभ

- प्लास्टिक रिसाइकिलिंग होने से ट्रेंचिग ग्राउन्ड की समस्या नही रहेगी ।
- अजैविक कूडा खुले में न जलने से बशैली गैसों का उत्सर्जन नही होगा। जिससे ग्लोवल वार्मिग की समस्या को कम किया जा सकता है।
- यदि सभी लोग खुले में कूडा न गिराये तो गन्दगी से बीमारियों पर भी नियंत्रण हो सकता है।
- पॉलिथीन न खाने से जानवरों की अकाल मृत्यु नही होगी तथा जानवरों के दुग्ध उत्पादन क्षमता बढेगी।
- पॉलिथीन खुले में व नालों में न गिरने से नाले बंद नही होंगे तथा मुम्बई जैसी घटनाओं की पुनराबृति नही होगी।
- यदि कूडा नही गिराया जायेगा तो नदियॉ दूशित नही होगी तथा गंगा एक ान प्लान जैसे भारी भरकम योजनाओं में अत्यधिक धन व्यय नही होगा।
- यदि सम्पूर्ण वि व में कागज रिसाइकिल किया जाय तो कागज उद्योंगो पर पेडों की खपत कम होगी पेड कम कटेंगे तो पर्यावरण सम्बर्द्धन होगा।
- नगर पालिकायें यदि इस योजनाओं को अपनायें तो अजैविक कूडा विक्रय करने से तथा जैबिक कूडे से खाद बनाने से अच्छा धन अर्जित कर सकते हैं यहॉ तक कि समस्त कर्मचारियों को इसी धन से बेतन दिया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर श्रीनगर में प्रतिदिन 4 ट्राली कूडा एकत्र होता है एक ट्राली में 20 कुन्तल कूडा भी एकत्र हुआ तो 4 ट्रालियों में 80 कुन्तल अथवा 8000 किलो कूडा एकत्र होता है एक दिन में 8000 किलो गुना 2.00रू0 16,000.00रू0एक दिन की आय होती है इस प्रकार प्रतिमाह 4,80,000.00रू0 श्रीनगर जैसे छोटे भाहर में ही अर्जित किये जा सकते हैं ,पूरे बर्श में 57.6लाख रू0 अर्जित होता है। यदि 100 कर्मचारी भी कार्य करें तो एक कर्मचारी को बर्श में 57,600.00 और माह में 4,800.00रू0 होता है

जबकि श्रीनगर नगर पालिका में 60–70 कर्मचारी ही हैं। इस योजना के लिए मात्र साइकिल रिक ाों में 2 या तीन भाग कर अथवा इतने ही संख्या में डिब्बे रखकर प्रत्येक घरों से कूडा लेकर इस योजना का लाभ आपकी नगर पालिका को मिल सकता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अगर इसी प्रकार अन्य नगर पालिकायें भी इस योजना को अपनायें तथा सरकार द्वारा कूडा गिराने पर पूर्णरूप से प्रतिबंधित किया जाय तथा बिदे ाों की भॉति कूडा गिराने वालों से अर्थदण्ड वसूला जाय तो कूडे से पर्यावरण को होने वाले नुकसान से निजात मिल सकता है। श्रीनगर में कूडे गिराने वालों पर 50 रू0 से लेकर 500.00रू0 तक अर्थदण्ड लिया जा रहा है।
- यदि इस प्रकार से जैविक खाद हर नगर पालिकाओं में बनना भाुरू हो जाय तो खेतों में अथवा कीचन गार्डनों में जैविक खाद का प्रयोग होने से सब्जियों व फलों का स्वाद बर्शो पूर्व की भॉति पुनः लौटेगा जिससे
- यदि समस्त भारत बर्श में यह योजना चलायी जाय तो जैविक खाद के वितरण व उत्पादन हेतु कृशि विभाग को भी इस योजना में सम्मिलित किया जाना आव यक होगा जिससे विधिवत जैविक खाद का उपयोग तथा उत्पादन किया जा सके तथा अच्छे वैज्ञानिक पद्धति से जैविक खाद तैयार किया जा सके।
- उत्तरॉचल सरकार के मनसूबों की भॉति यदि सभी लोग 20 –20 रू0 प्रतिमाह कूडा उठाने के एवज में दें तो वार्ड स्वच्छता समिति बनाने की आव यकता नही रहेगी वही दूसरी ओर वार्ड स्वच्छता समिति की भॉति जनसहभागिता होगी। यदि वार्ड स्वच्छता समितियों का गठन किया जाता तो कुछ समितियॉ कार्य कर पायेंगी जबकि कुछ समितियॉ कार्य नही कर पायेंगी। इसलिए पर्यावरण मित्र जैसी योजना एकसूत्रीय योजना होने के कारण चिरस्थायी रहेगी, इस योजना में सुपरवाइजरों की तैनाती भी अतिआव यक होगी । यहॉपर यह देखा गया है कि कूड़े उठाने के एवज में मात्र 20 प्रति ात लोगों द्वारा ही 10–10रू0 प्रतिमाह दिया जा रहा है जिससे यह स्पश्ट होता है कि यदि स्वच्छता समितियॉ गठित भी की जायं तब भी लोगों द्वारा आर्थिक सहयोग पूर्णरूप से नही किया जायेगा जिससे समितियॉ स्थायी नही रह पायेंगी।
- अतः समस्त नगर निगमों तथा नगर पालिकाओं के उपलब्ध सफायी कर्मियों के माध्यम से ही यह योजना चलायी जानी अतिआव यक है यदि कूड़े उठाने की एवज में 10 अथवा 20 रू0 प्रतिफल नही भी दिया गया तबभी पर्यावरण मित्र योजना के तहत जैविक तथा अजैविक अलग–2 किये गये कूड़े से प्राप्त आय सफायी कर्मियों के बेतन हेतु पर्याप्त होगा तथा अलग से श्रीनगर की भॉति योजना चलाने में कूडा मिश्रित (मिक्स) होने की पूर्ण सम्भावना है ।
- कुछ कूडा इस प्रकार का भी होता हैं जो न तो रिसाइकिल किया जा सकता है और न ही कूडे से खाद बनायी जा सकती है जैसे चिप्स, तम्बाकुओं के थैले आदि, इसके अतिरिक्त कुछ ऐसा प्लास्टिक भी होता है जो जैविक कूडे के साथ मिक्स होता है इस प्रकार के

कूडे से जापान जैस दे ों में बिजली तैयार भी की जा रही है। यदि जैविक और अजैविक कूडा अलग–2 करने के उपरान्त इस प्रकार का कूडा भारी मात्रा में एकत्रित हो जाय तो संबंधित कम्पनी के मालिक के विरूद्ध गन्दगी के जुर्म में धारा 133 के अर्न्तगत कार्यवाही भी की जा सकती है जिससे वे इस तरह का पैक बनाये जो रिसाइकिल हो अथवा सम्बन्धित कम्पनी द्वारा अपने उत्पादों से उत्पन्न कूड़े का स्वयं निस्तारण की व्यवस्था हो।

योजना हेतु आव यक साधन

- 1) 200 परिवारों पर एक रिक ा, जैविक कूडे हेतु दो कूडेदान तथा अजैविक कूडे हेतु दो बोरे। 2)..जैविक खाद बनाने हेतु ई0एम0 घोल। 3). जैविक कूड़ा ढकने हेतु पॉलिथीन अथवा टाट पटिटयॉ। 4).जैविक खाद बनाने हेतु टिन सैड व अजैविक कूड़ा संग्रह हेतु अन्य टिनसेट। 5).जैविक खाद संग्रह हेतु भण्डार कक्ष ।
- इसके अतिरिक्त श्रीनगर में एक गौ ाला का निर्माण भी किया गया है जिसमें दिन में सभी गायों को नजदीकी जंगलों में चुगाने के लिए भेजा जा रहा है तथा रात्रि के समय गौ ाला में सब्जी की दुकानों से प्राप्त जैविक कूडे को चारे के रूप में दिया जा रहा है। तथा उनसे प्राप्त होने वाले गोबर को कूडे में मिलाकर जैविक खाद तैयार की जा रही है। अतः कृपया श्रीनगर ,कीर्तिनगर,नन्दप्रयाग,सतपुली की भॉति अपने क्षेत्रों में भी पर्यावरण

मित्र योजना अपनाइयें तथा पर्यावरण सरंक्षण में सभी लोगों को भागीदार बनें।

विद्या विवादाय,धनम् मदाय, ाक्ति परे ाा, परिपीडनायः
खलस्य दसाधू विपरीत मेधा, ज्ञानाय, दानाय च रक्षणायः

कृपया आयें पर्यावरण मित्र योजना अपनाकर पर्यावरण को बचायें तथा आने वाली पीड़ी का स्वच्छ वातावरण में जीने का अवसर दें।

(हरकसिहं रावत)
उपजिलाधिकारी,श्रीनगर गढ़वांल
9412055740, 01346253406,01346251178
इमेलः harakbhaga@rediffmail.com